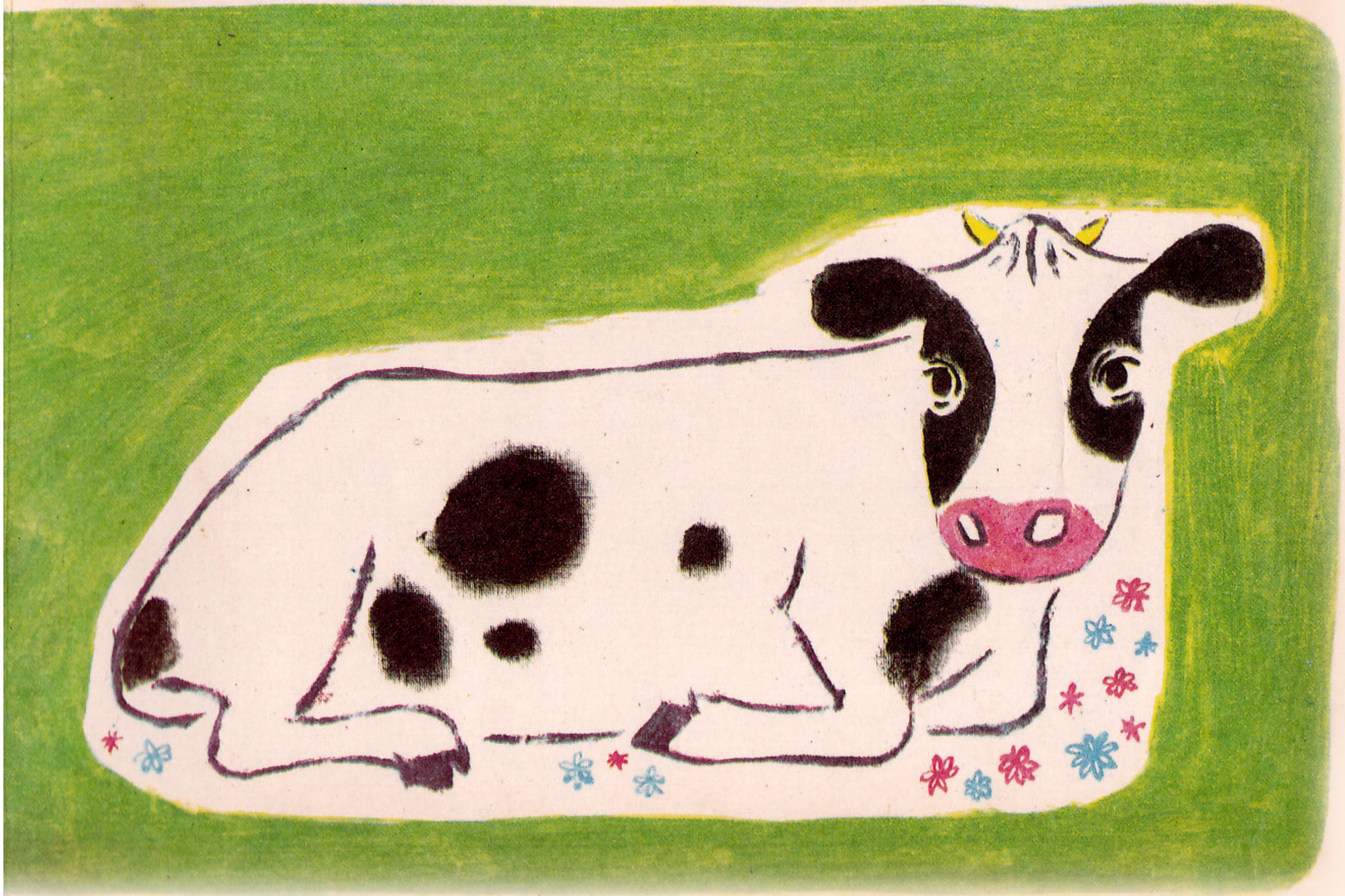
लालची बछिया, गुलाबो

मोमोको इशिई   चित्रांकन : चियोको नाकातानी



ISBN 81-237-0045-8

यह पुस्तक टोयोटा फाउंडेशन के सहयोग से प्रकाशित की गयी है। मूल पुस्तक का प्रकाशन जापान में फुकुइसान शोतेन पब्लिशर्स द्वारा किया गया था।

पहला संस्करण : 1992

दूसरी आवृत्ति : 1998 (शक 1919)

Rosy, The Greedy Calf (*Hindi*)

रु. 14.00

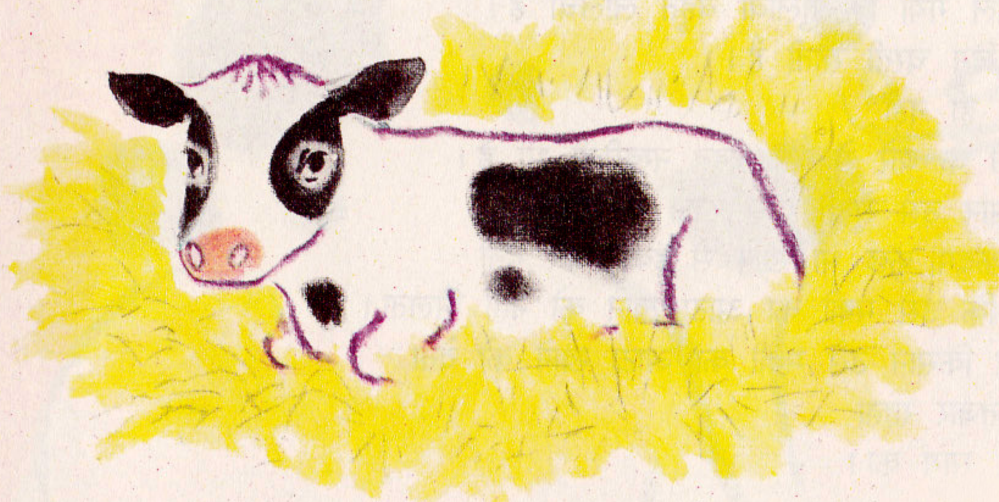
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली - 110 016 द्वारा प्रकाशित

लालची बछिया, गुलाबो

मोमोको इशिई
चित्रांकन : चियोको नाकातानी
हिंदी अनुवाद : मंजुला माथुर



एक बार की बात है,
पहाड़ की घाटी में
किसी किसान के खेत में एक बछिया ने जन्म लिया।
किसान ने उसका नाम रखा — गुलाबो।
गुलाबो इसलिए क्योंकि उस बछिया की बहुत प्यारी सी गुलाबी नाक थी।
किसान गुलाबो का बहुत ध्यान रखता था।



पर किसान को जल्दी ही
ये पता चल गया कि गुलाबो बहुत लालची है।
वह सारा दिन चरती रहती है।
और इतना ही नहीं
अपने खाने के बारे में वह बहुत नखरीली भी है।
अगर किसान उसे सूखी घास खाने को देता
तो वह एकदम कुछ भी खाने से इंकार कर देती
जब तक कि उसे मक्की का आटा खाने को नहीं मिलता।
और अगर किसान उसे मक्की का आटा खाने को देता
तो उसे इंतजार रहता
हरे पत्तेदार साग का।

सर्दियों के दिनों में किसान और उसके परिवार के लिए
गुलाबो का मनपसंद खाना जुटाना
बहुत ही मुश्किल हो जाता था।
गुलाबो तो मजे से खाती पीती और इस तरह खूब बड़ी होती गयी।
उसका सुंदर शरीर हमेशा चमकता रहता।

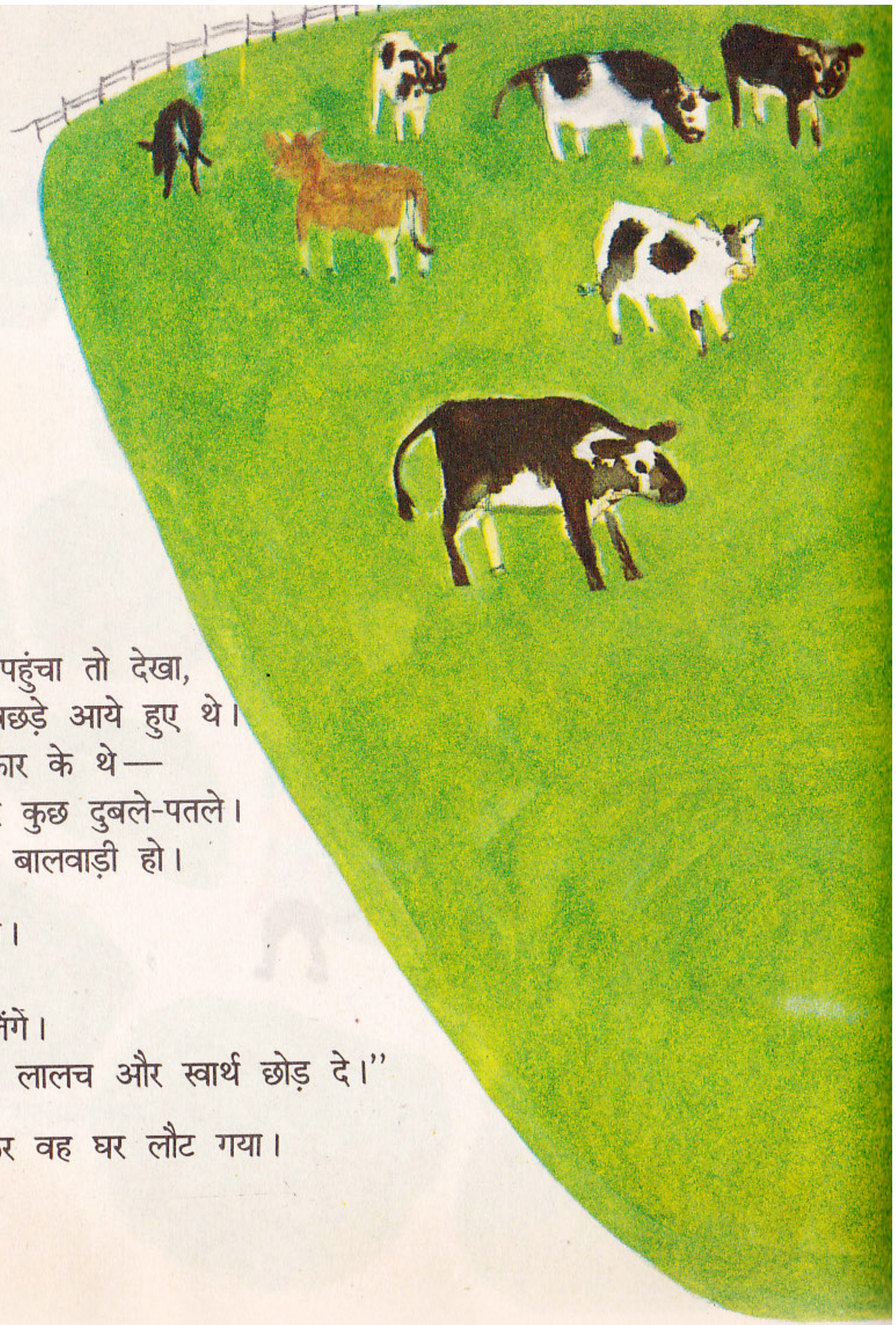




और फिर बसंत आ गया।
मैदान हरी-हरी घास से भर गये,
पहाड़ों पर पेड़ फिर से हरे हो गये।
किसान ने सोचा यही समय है जब गुलाबो को पहाड़ पर
किसी चरागाह में ले जाना चाहिए।



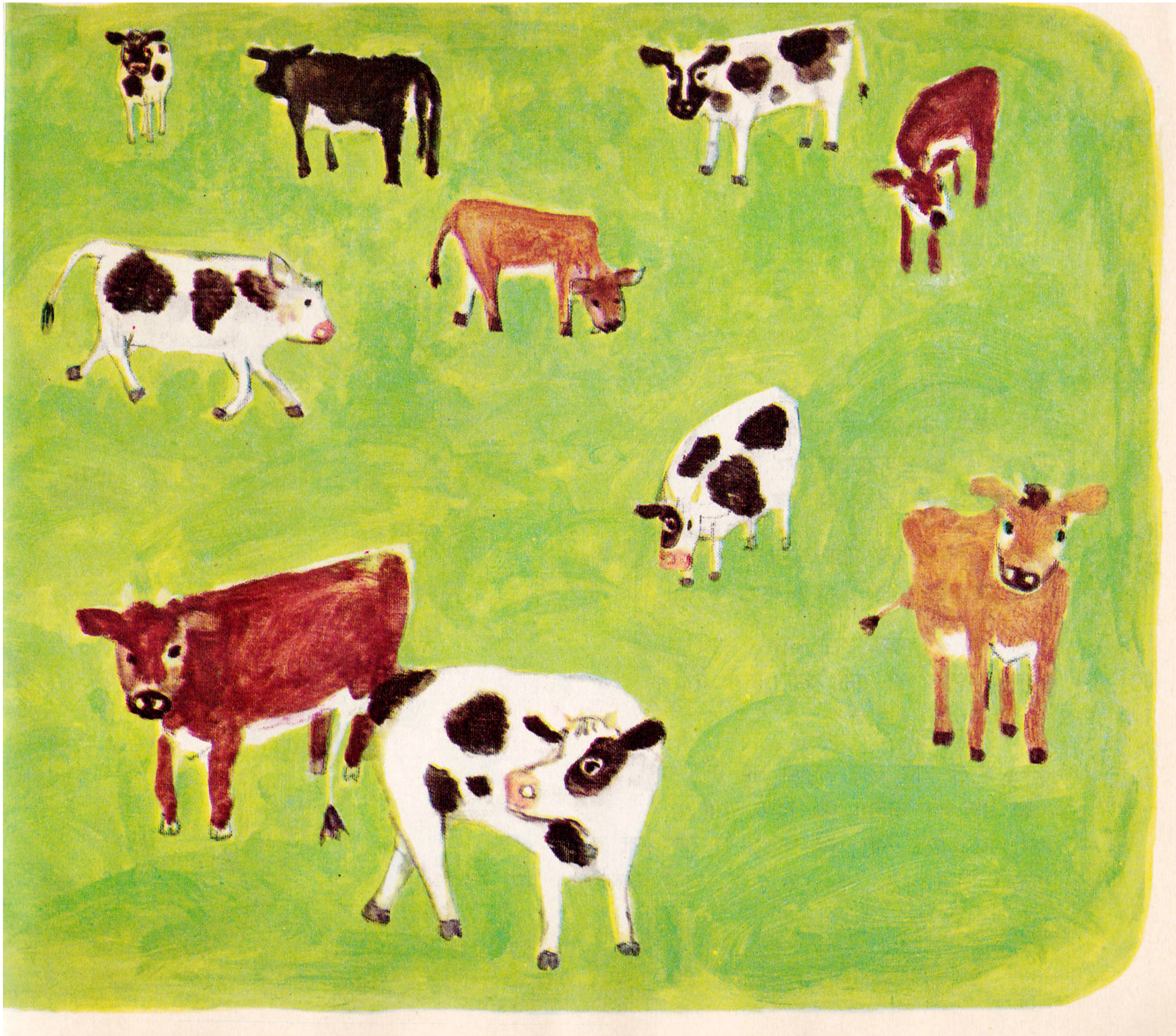




जब किसान गुलाबो को लेकर वहां पहुंचा तो देखा,
वहां दूसरे खेतों से और भी बहुत बछड़े आये हुए थे।
वे सब अलग-अलग रूप और आकार के थे—
कुछ बड़े, कुछ छोटे, कुछ मोटे और कुछ दुबले-पतले।
ऐसा लगता था जैसे वह बछड़ों की बालवाड़ी हो।

किसान मन ही मन बहुत खुश हुआ।
"यह जगह बिल्कुल ठीक है।
यहां गुलाबो को बहुत से साथी मिलेंगे।
हो सकता है उनके साथ रहकर वह लालच और स्वार्थ छोड़ दे।"

गुलाबो को वहीं चरागाह में छोड़ कर वह घर लौट गया।

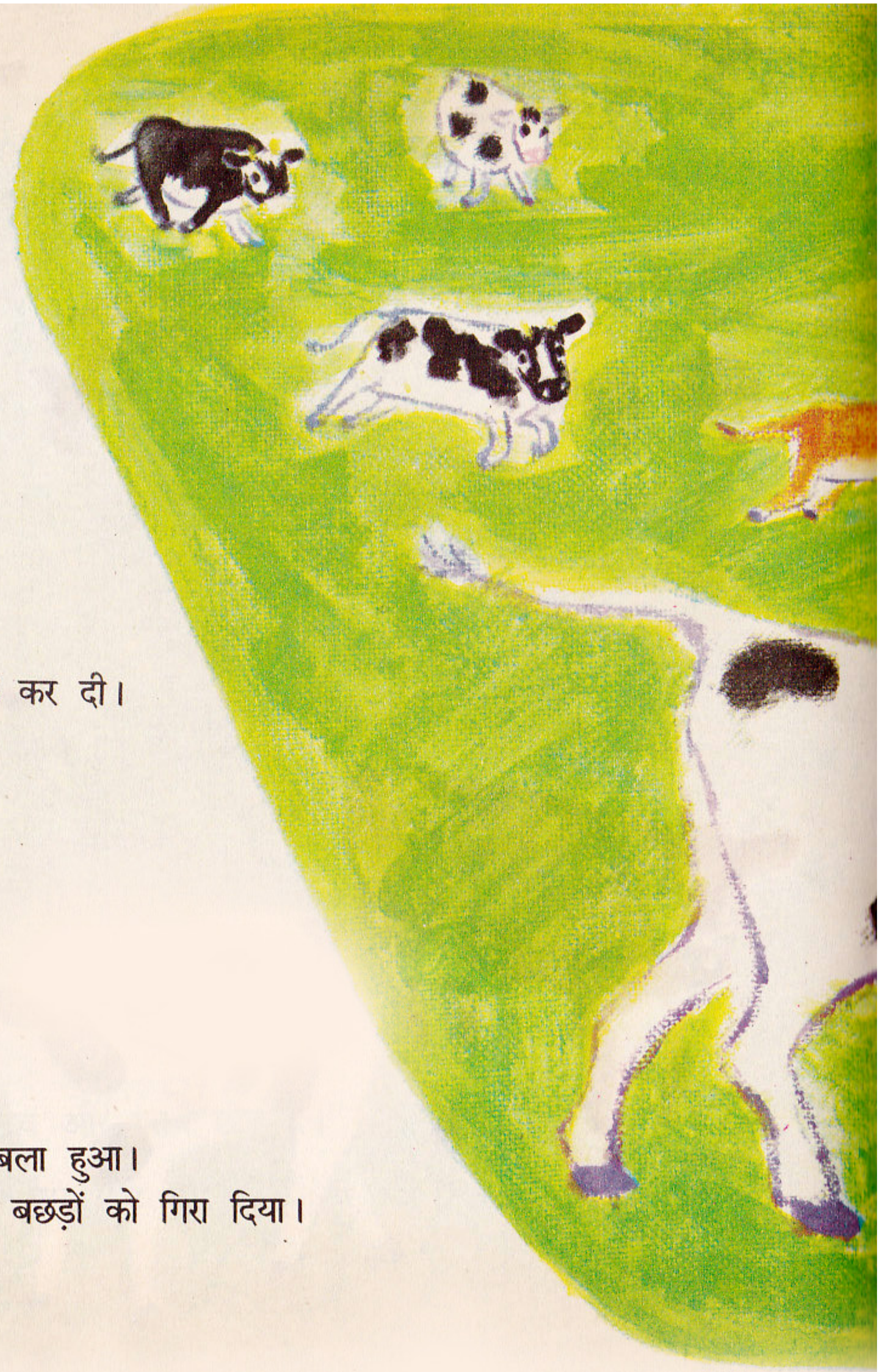


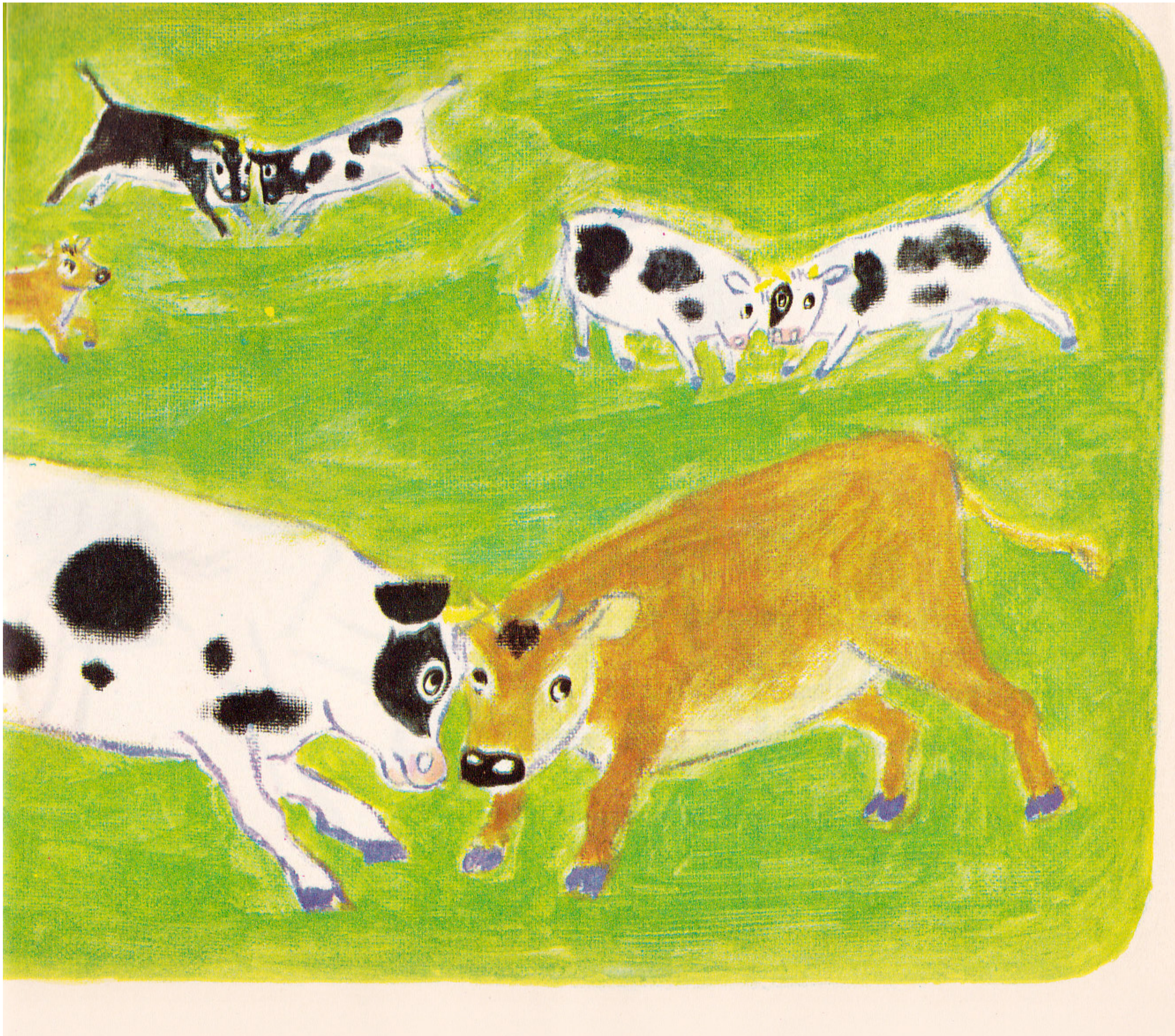
जैसे ही किसान वहां से गया,
सभी बछड़े चरागाह के बीच में
एक जगह पर इकट्ठे हो गये।
और उन्होंने एक दूसरे से धक्का-मुक्की शुरू कर दी।

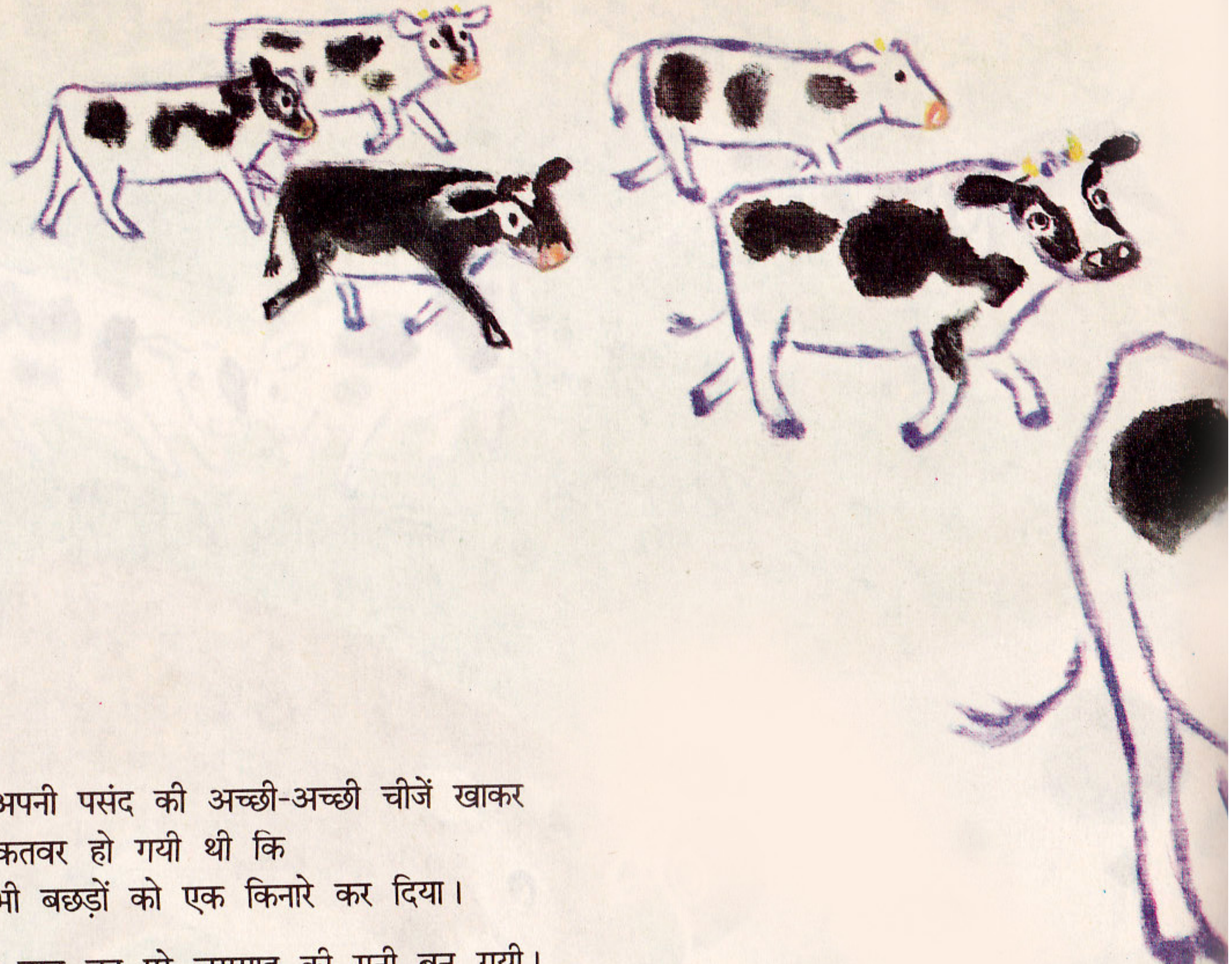
किसी ने किसी को पीछे धकेला,
किसी ने किसी को धक्का दिया।

असल में वे हमेशा इसी तरह
अपने चरागाह की रानी चुना करते थे।

सबसे पहले तो
दुबले-पतले और छोटे बछड़ों को ही
धक्का मार कर अलग कर दिया गया।
फिर मोटे तगड़े और बड़े बछड़ों में मुकाबला हुआ।
गुलाबो ने 3... 4... 5... 6... 7... कई बछड़ों को गिरा दिया।

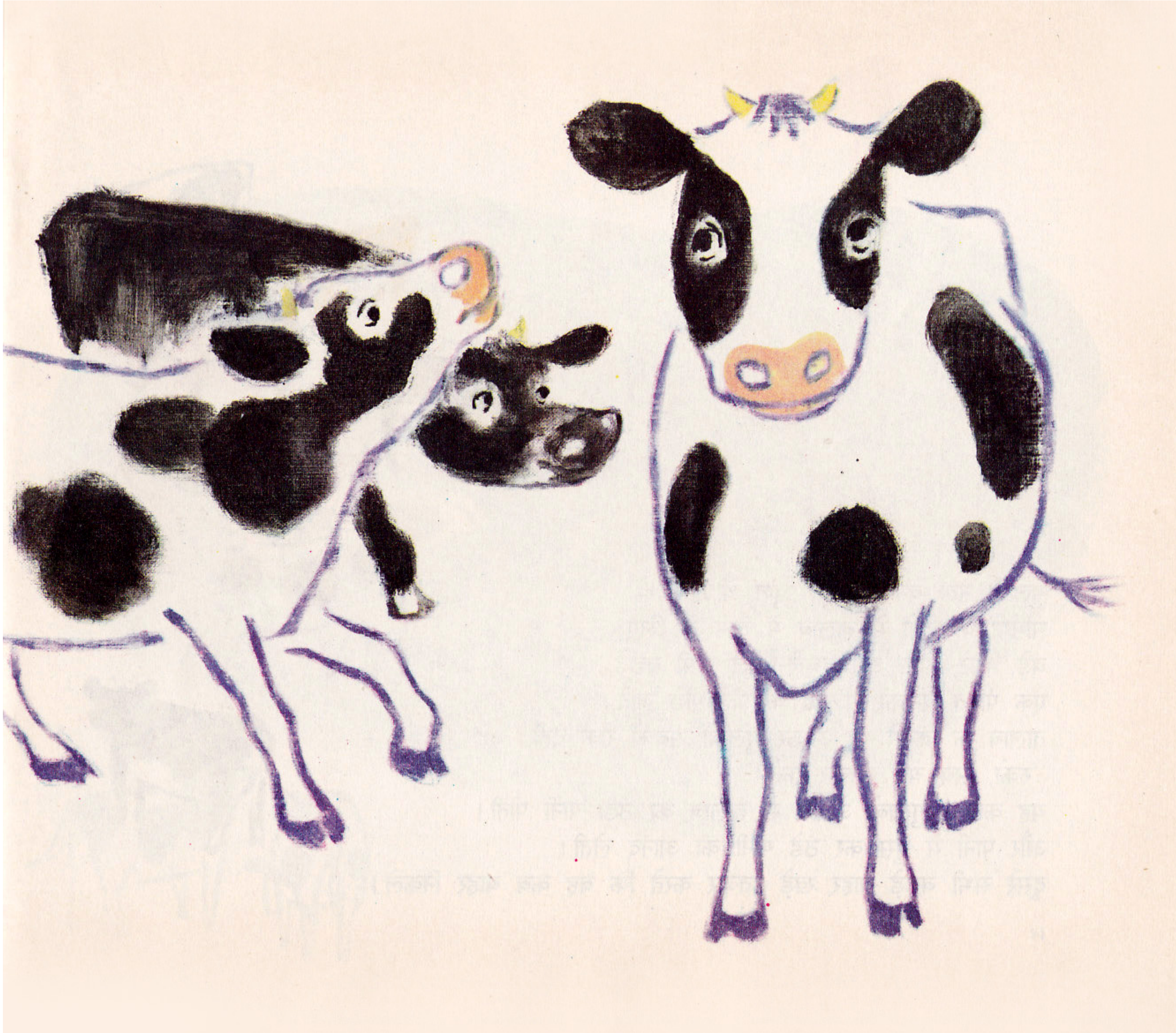


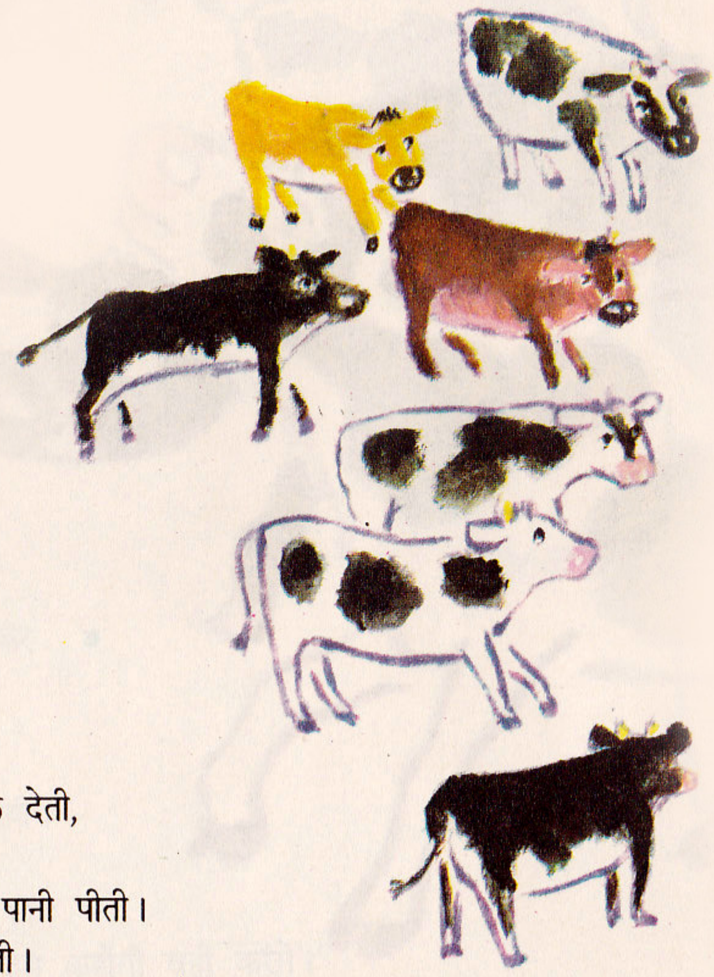




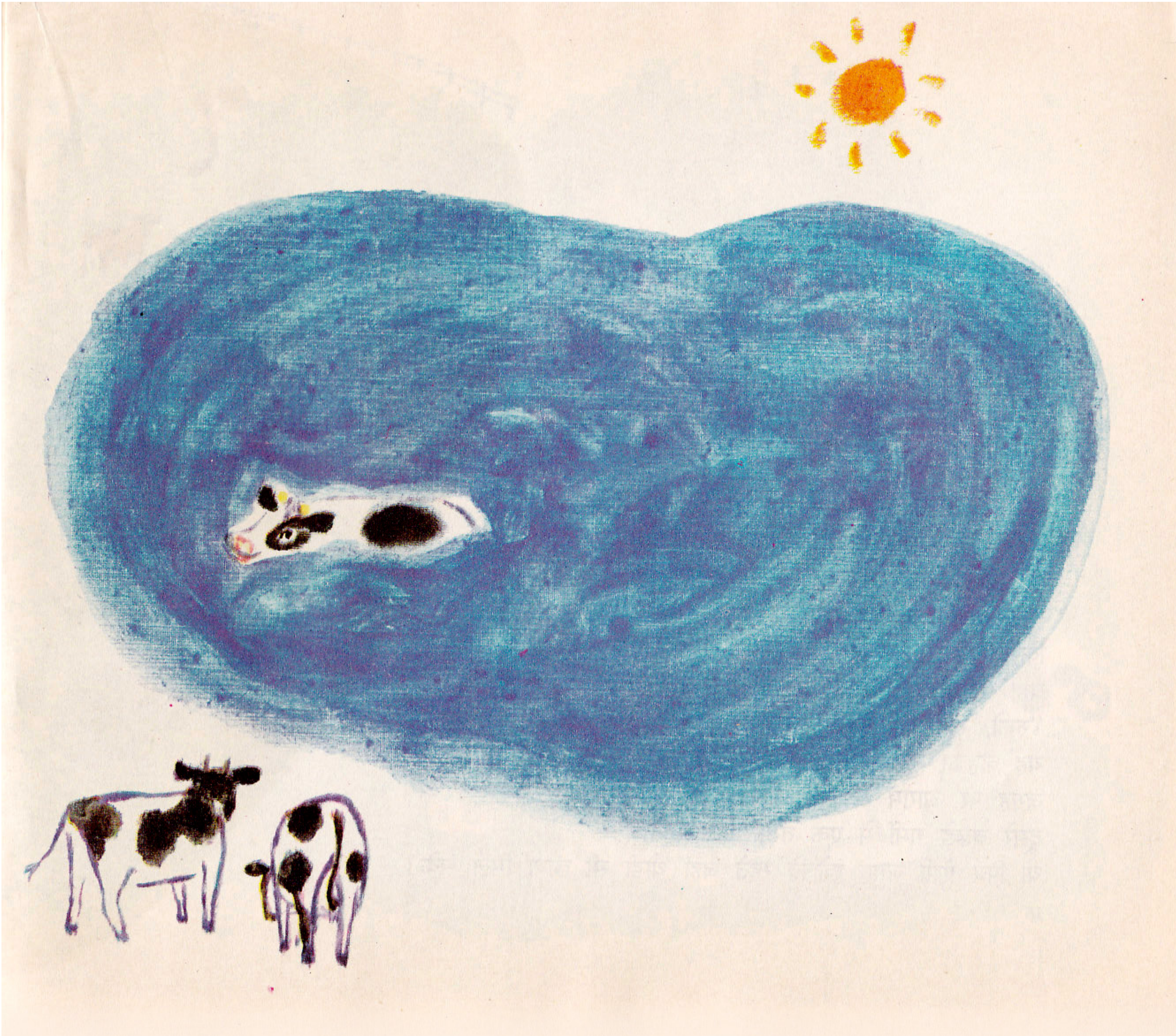
गुलाबो अपनी पसंद की अच्छी-अच्छी चीजें खाकर
इतनी ताकतवर हो गयी थी कि
उसने सभी बछड़ों को एक किनारे कर दिया।

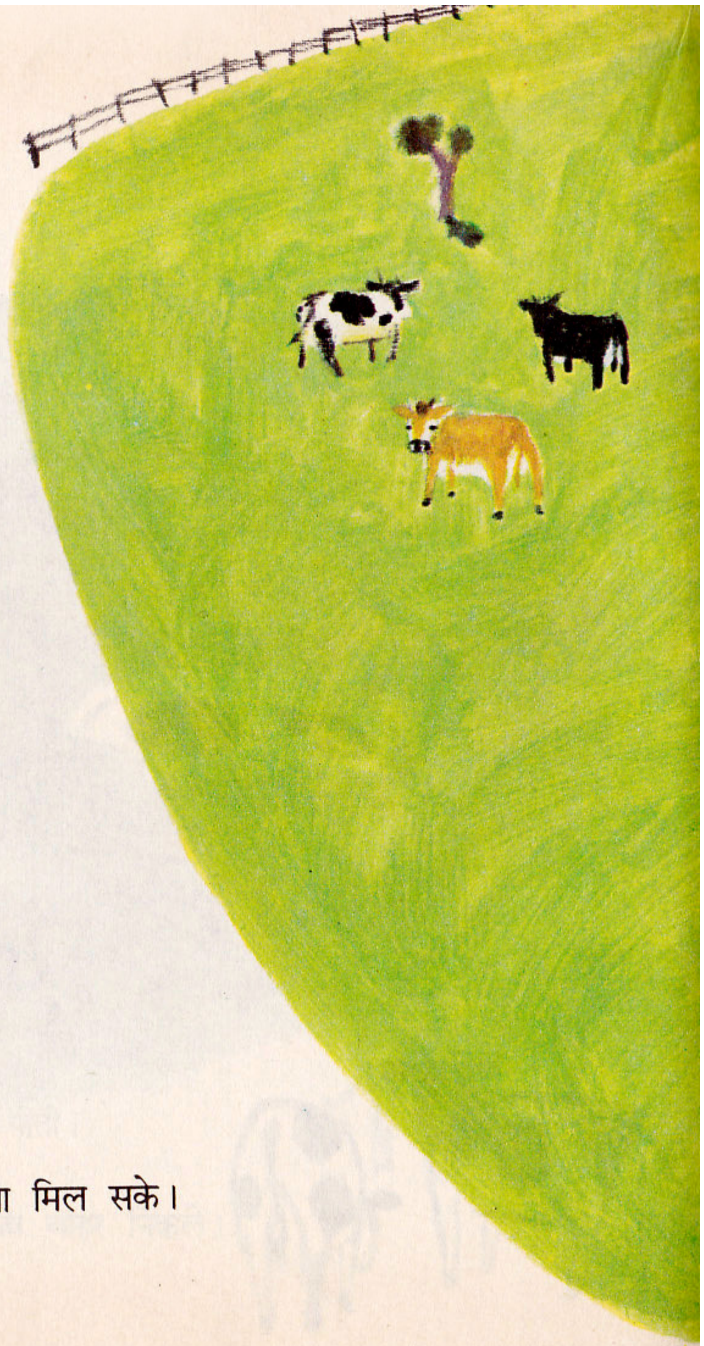
और इस तरह वह पूरे चरागाह की रानी बन गयी।
सारे बछड़े मिलकर चिल्लाए,
"ओह गुलाबो, तुम कितनी बड़ी और ताकतवर हो!
हम सब आज से तुम्हारी बात मानेंगे और जो तुम कहोगी वही करेंगे।"



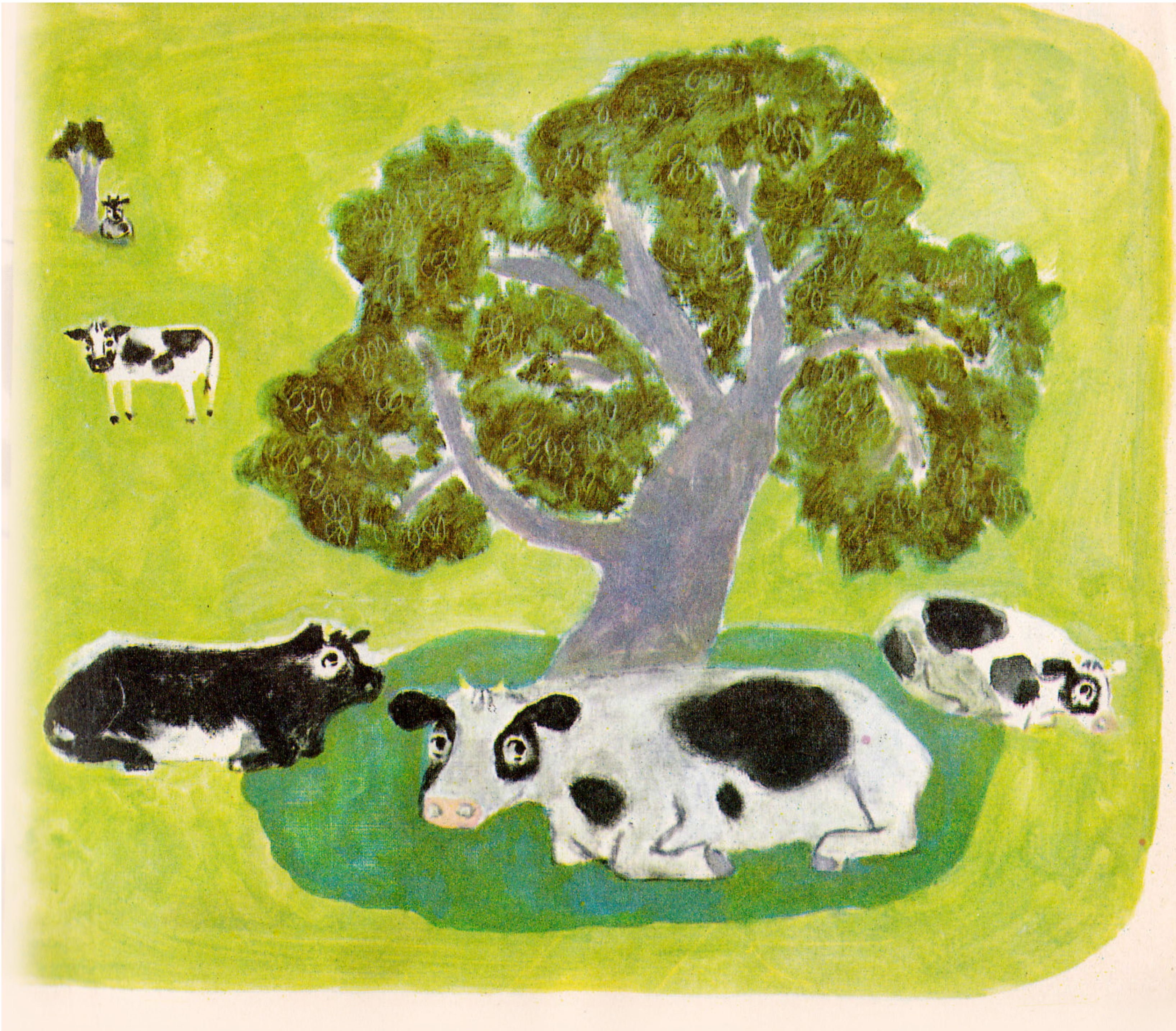


गुलाबो नेता बनकर बहुत खुश थी।
गर्मियों के दिनों में तालाब में तैरने के लिए
बड़े, छोटे, मोटे और दुबले-पतले सभी बछड़े
एक पंक्ति बनाकर गुलाबो के पीछे-पीछे जाते।
तालाब के किनारे पर आकर गुलाबो सबको रोक देती,
"रुको, सब यहीं इंतजार करो।"
यह कहकर गुलाबो आराम से तालाब का ठंडा पानी पीती।
और पानी में घुस कर ठंडे पानी का आनंद लेती।
दूसरे सभी बछड़े बाहर खड़े इंतजार करते कि वह कब बाहर निकले।



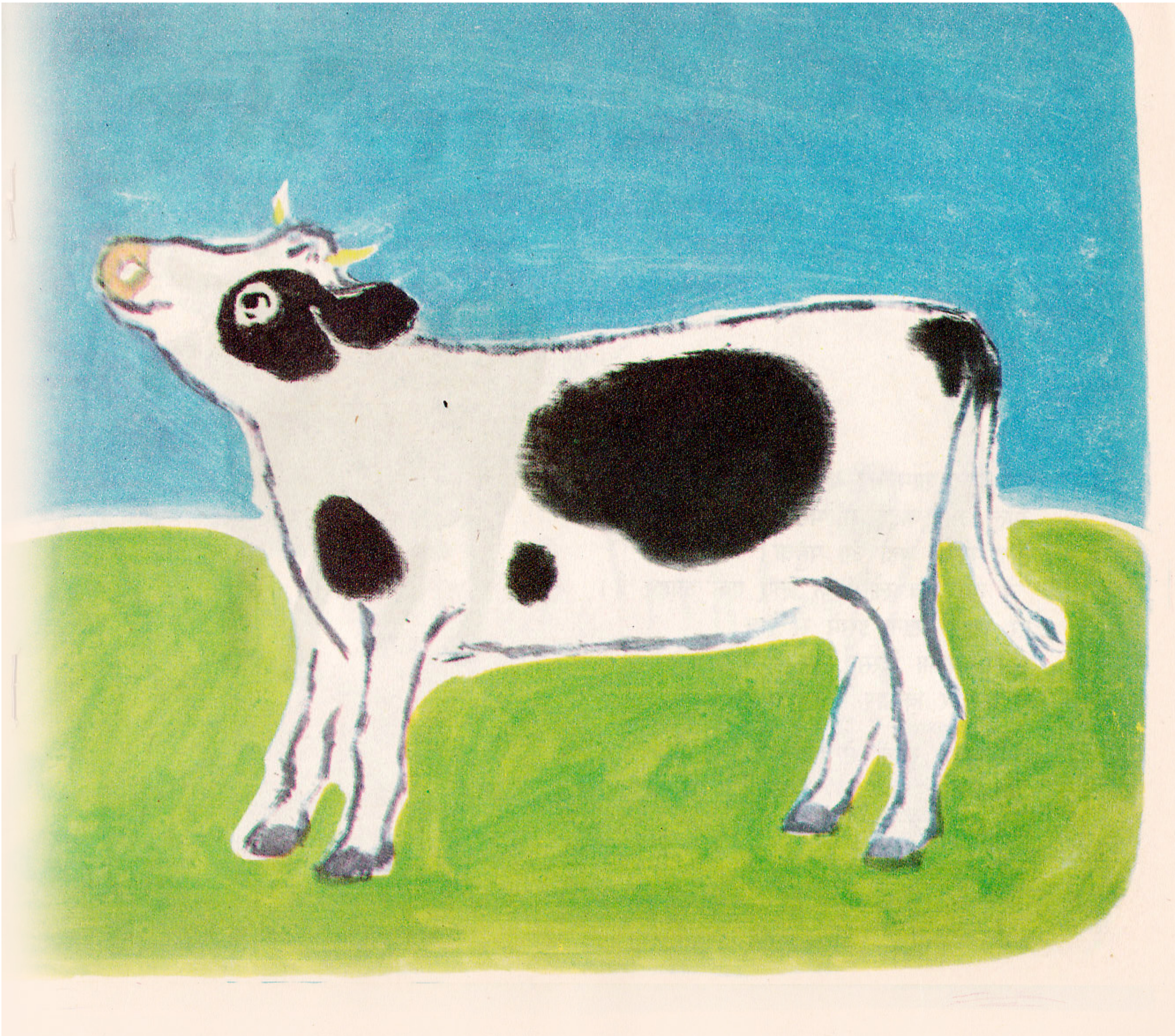


धूप और गर्मी से भरी दोपहरी में भी यही होता।
बड़े, छोटे, मोटे और दुबले-पतले सभी बछड़े
एक पंक्ति बनाकर गुलाबो के पीछे-पीछे जाते।
चलते-चलते वे सब खेतों के बीच
किसी बड़े से छायादार पेड़ के पास पहुंचते।
वहां पहुंचते ही गुलाबो सबको रोक देती।
"रुको, सब यहीं इंतजार करो!"
यह कहकर गुलाबो खूब छायादार
जगह पर आराम से लेट जाती।
दूसरे बछड़े गर्मी में एक तरफ खड़े रहते
या फिर ऐसी जगह खोजते रहते जहां थोड़ी सी छाया मिल सके।



कभी-कभी किसान चरागाह में
अपने बछड़ों को देखने के लिए आते
कि वे कैसे हैं, कितने बड़े हुए हैं।
"वाह, सभी बछड़े हरी हरी मुलायम घास
खा कर खूब बड़े हो गये हैं।"
सभी ये कहते,
"पर गुलाबो इनमें सबसे अच्छी लगती है।"
गुलाबो जब ये सुनती तो खुशी से
चिल्ला पड़ती, "एओं...एओं।"



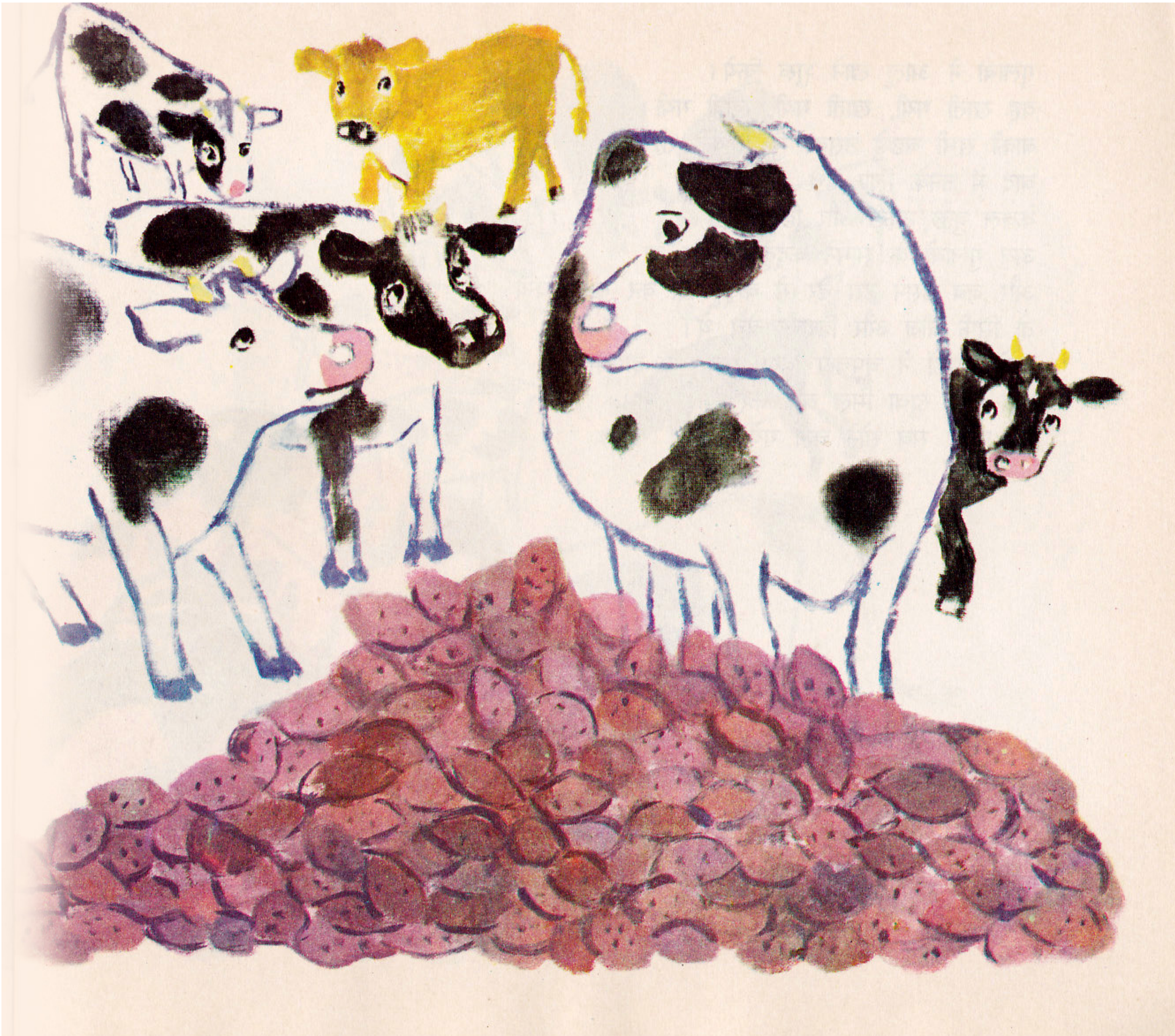




एक दिन शाम को एक किसान
आलू और कद्दू से भरा
ठेला लेकर वहां आ पहुंचा।
"ये तुम सब लोगों के लिए एक उपहार है।
पर ध्यान रखना इसमें से सब
अपना-अपना हिस्सा लेना।"
ये कहकर किसान चला गया।

सारे बछड़े खुशी से चिल्लाए,
"एओं!" "एओं!!" "एओं!"
गुलाबो बोली, "रुको एक मिनट जरा इंतजार करो।"
और यह कहकर वह आलू के ढेर की तरफ दौड़ी।





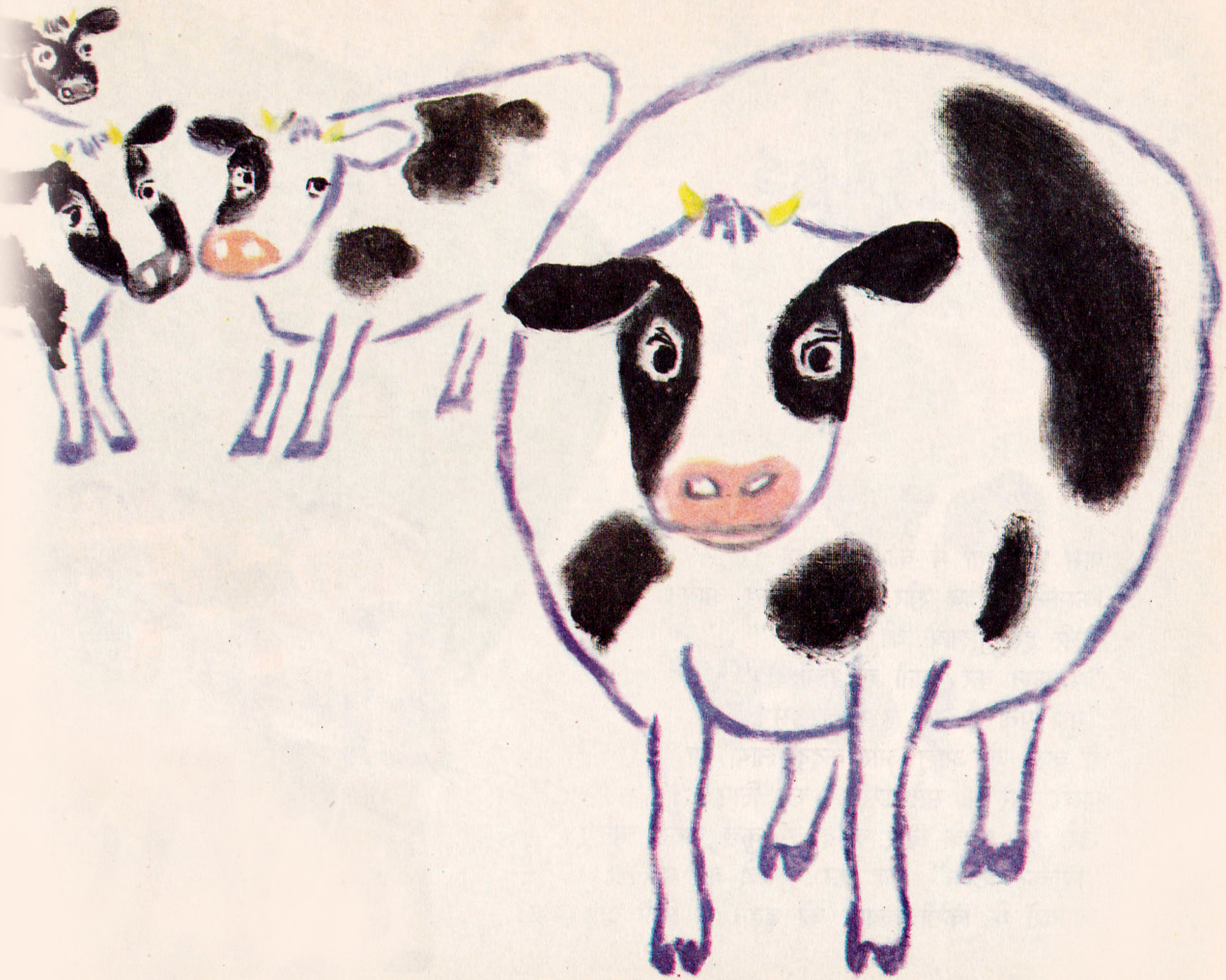
गुलाबो ने आलू खाने शुरू किये।
वह खाती गयी, खाती गयी, खाती गयी।
बाकी सभी बछड़े उसका मुंह ताकते रहे।
बाद में उनके लिए बचे
केवल कुछ टुकड़े और छिलके।
अब गुलाबो के सामने कद्दू का ढेर था
और जब उसने उस ढेर से कद्दू खा कर खत्म किये
तो सिर्फ बीज और छिलके बचे थे।
दूसरे बछड़ों ने चुपचाप बिना आपस में झगड़े
वही बचा खुचा मिल बांट कर खा लिया।
खा पीकर सब सोने चले गये।



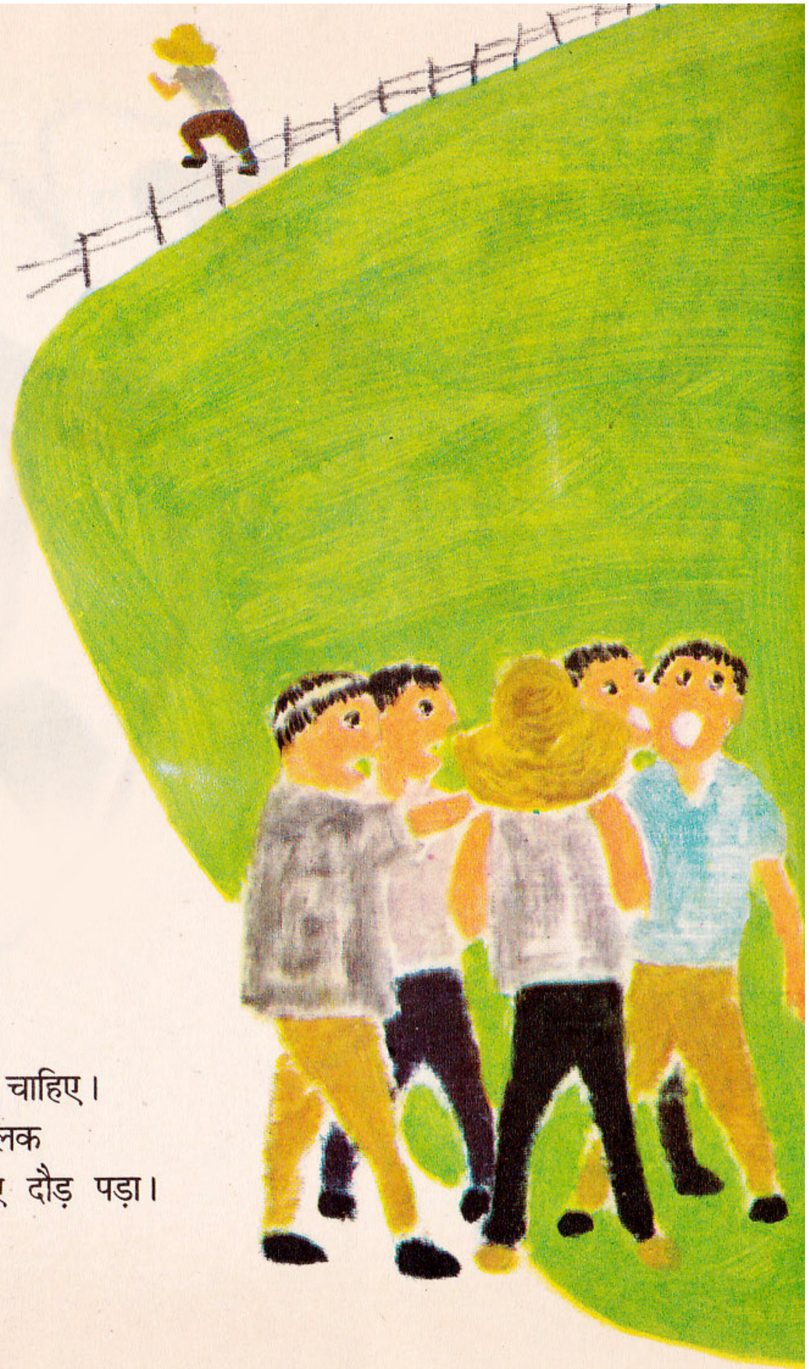


दूसरे दिन जब सब बछड़े सो कर उठे
तो सामने जो देखा तो देख कर हैरान हो गए।
उन्होंने देखा एक बहुत बड़े गुब्बारे की तरह फूली हुई कोई चीज
चरागाह के बीचों-बीच खड़ी है।
पहले तो वे उसे देखते ही डर गये।
फिर उन्होंने सोचा
इस चीज को पास जा कर देखें तो सही
आखिर वह है क्या!
तभी अचानक उस गुब्बारे में से पतली सी आवाज आयी, "एओं।"
"अरे ये तो बछड़ा है!"
"हां, ये तो गुलाबो है!"
"गुलाबो तुम्हें क्या हो गया!"
सब पूछने लगे।
पर गुलाबो कुछ नहीं बोली।
उसकी आंखों से झर-झर
आंसू बह रहे थे।
"गुलाबो बताओ न तुम्हें क्या हुआ!"
गुलाबो बहुत धीमी सी आवाज में बोली,
"मेरा पेट बहुत फूल गया है,
मुझसे बोला भी नहीं जा रहा।
ऐसा लग रहा है मेरा पेट अभी फट जायेगा।"
"अरे इसका तो पेट फटने ही वाला है।
चलो हटो, इसके पास से हट जाओ।"
सभी बछड़े बहुत घबराए हुए थे।





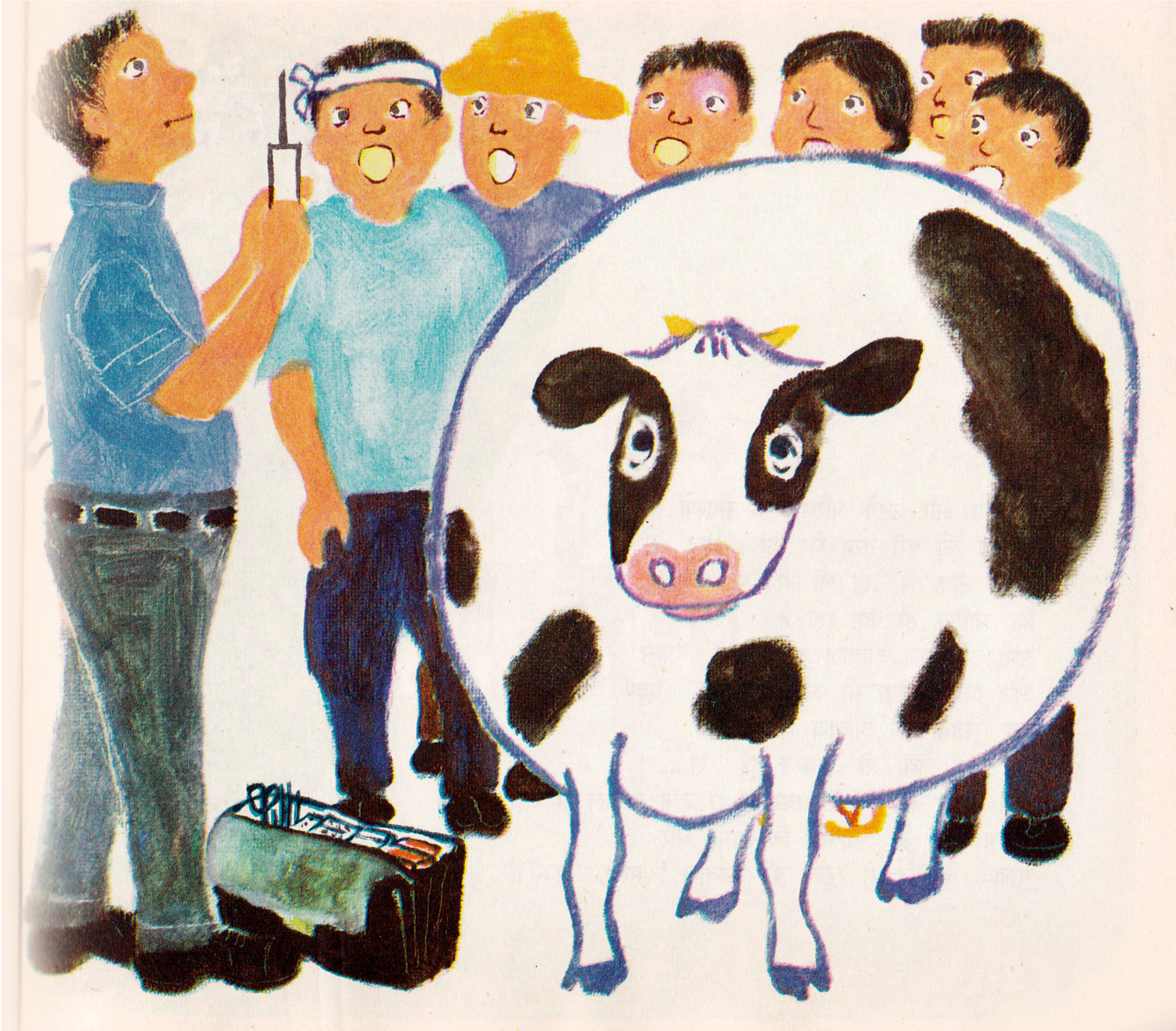
पास ही खेतों में काम कर रहे
किसानों ने जब शोर सुना तो दौड़े आये।
''अरे इस गुलाबो को तो देखो!''
''ये- फूल कर दुगनी हो गयी है।''
''मुझे पता है क्या हुआ है इसे।
मैं कल जो आलू और कद्दू लाया था
जरूर सारे के सारे इसी ने खा लिए हैं।''
खैर, हमें इसके लिए जल्दी से कुछ करना चाहिए।
''बिल्कल ठीक'', कह कर गुलाबो का मालिक
जानवरों के किसी डाक्टर को ढूंढ़ने के लिए दौड़ पड़ा।







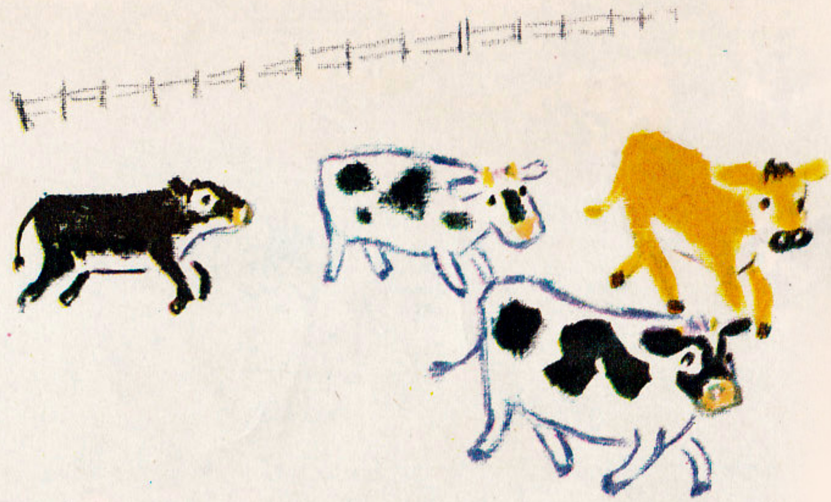
जब तक जानवरों का डाक्टर अपनी साइकिल से वहां पहुंचा
गुलाबो का पेट फूल कर पहले से तिगुना हो गया था।
डाक्टर ने जल्दी से उसकी जांच की और कहा,
"इसने जरूर बहुत ज्यादा खाना खा लिया है,
तभी इसके पेट में खूब वायु भर गयी है।
हमें जल्दी ही इसका कुछ इलाज करना होगा।"
डाक्टर ने अपने थैले में से एक लंबी सी सुई निकाली।
दूसरे बछड़े ये देख कर बहुत डर गये।
वे भाग कर चरागाह के दूसरे किनारे पर चले गये
और मुड़ कर गुलाबो को देखने लगे।



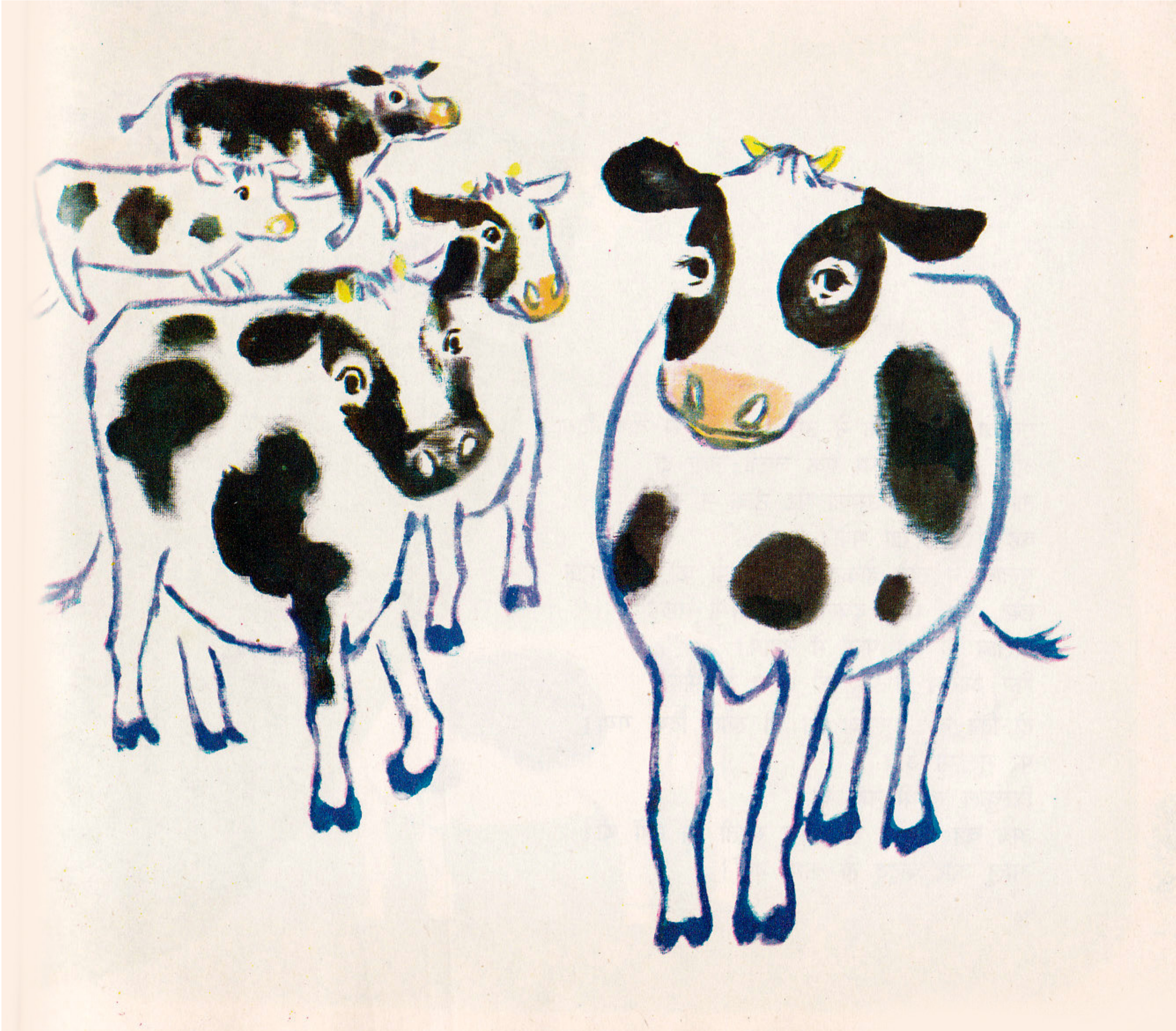
किसानों और उनके परिवार के सदस्यों ने
गुलाबो को पूरी तरह घेर लिया था।
बछड़े ठीक से देख भी नहीं पा रहे थे
कि आखिर हो क्या रहा है।
तभी उन्हें तेज आवाज सुनाई पड़ी, ''फुस...स्र...स।''
और फिर बारीक सी आवाज आयी, ''एओं।''
यह गुलाबो की आवाज थी।
फिर एक लंबी सी आवाज हुई ''श .... ।''
ऐसा लगा जैसे किसी टायर में से हवा निकल रही हो।
''अब ठीक है'', डाक्टर चिल्लाया और
गुलाबो के मुंह से खुशी की आवाज निकली, ''एओं।''

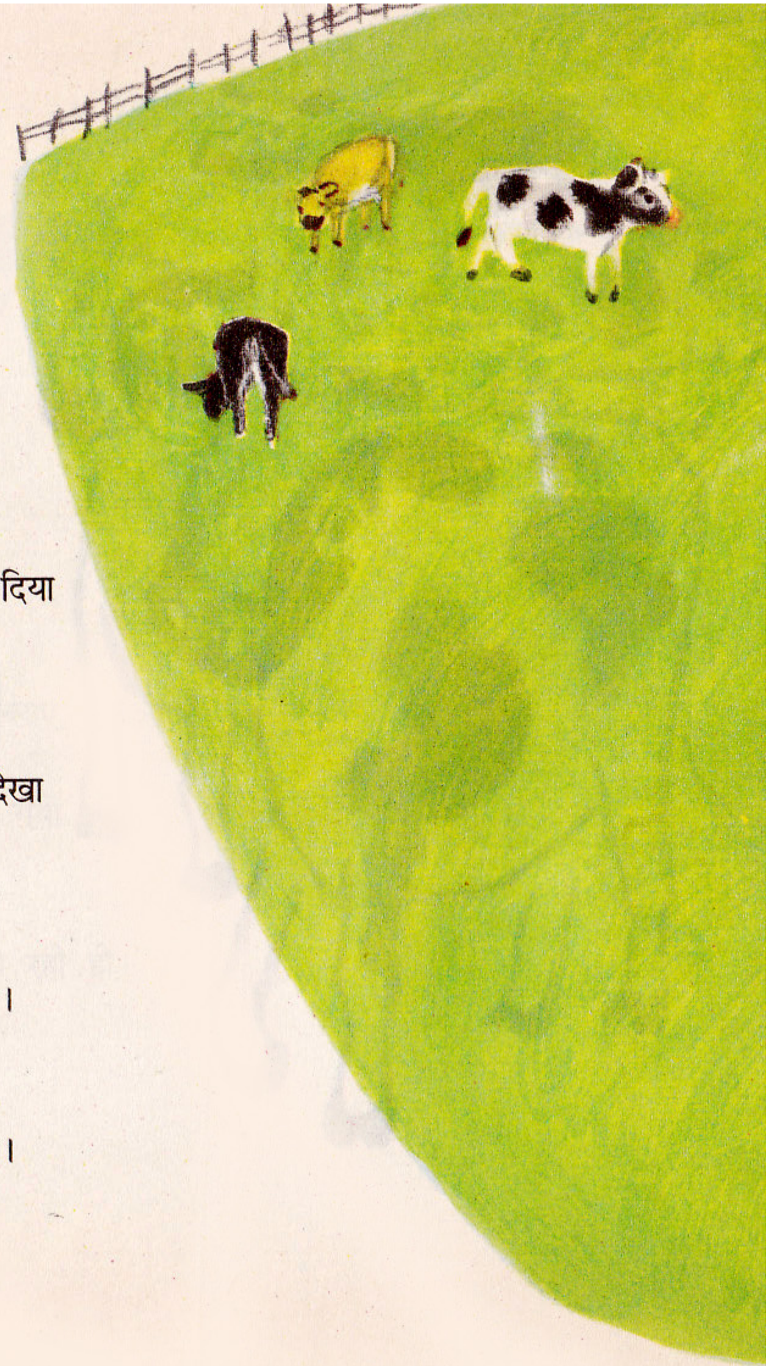






दूसरे बछड़े भी पीछे-पीछे तेज आवाज में चिल्लाए, "एओं।"
और गुलाबो को देखने के लिए दौड़े।
वह फिर से अपने पहले जैसे आकार में आ गयी थी।
"ओह गुलाबो हम कितने खुश हैं।
अच्छा हुआ तुम्हारा पेट फटा नहीं।
गुलाबो तुम फिर से पहले जैसी ही सुंदर लग रही हो।"
"गुलाबो हम इस बात से बहुत खुश हैं
कि तुम अब बिल्कुल ठीक हो।"
गुलाबो अपने किये पर बहुत शर्मिंदा थी।
"धन्यवाद, तुम सब को धन्यवाद",
उसने बहुत शरमा कर कहा।





गुलाबो के मालिक ने उसे एक पेड़ से बांध दिया
और उसके मुंह पर एक जाली लगा दी
ताकि जब तक उसका पेट ठीक न हो
वह कुछ न खा सके।
गुलाबो ने खड़े होकर दूसरे बछड़ों की ओर देखा
छोटे, बड़े, मोटे, दुबले-पतले सभी बछड़े
तालाब के ठंडे पानी में नहाये।
फिर आराम से पेड़ की छाया में सोये।
दो दिन बाद गुलाबो को भी खोल दिया गया।
पर गुलाबो अब
बिल्कुल स्वार्थी नहीं थी,
अब वह जरूरत से ज्यादा खाती भी नहीं थी।
आलू और कद्दू तो कभी नहीं!





एकः सूते सकलम्

रु. 14.00 ISBN 81-237-0045-8

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

